International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का आध्यात्मिक बुद्धि सन्दर्भ में अध्ययन

डॉ. राधा गुप्ता

शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड वि वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया। न्यादर्श हेतु बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र में अवस्थित जनपद झांसी के महाविद्यालयों में स्नातक स्तर के तृतीय बर्ष में अध्ययनरत 200 कला संकाय, 200 वाणिज्य संकाय एवं 200 विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। विभिन्न चरों के मापन हेतु मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध गुणाक का प्रयोग किया गया। उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में, निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक समस्यायें कम पायी गई। स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं में आध्यात्मिक बुद्धि की सकारात्मक भूमिका पायी गई।

Keyterms: स्नातक स्तर, शैक्षिक समस्याये व आध्यात्मिक बुद्धि

प्रस्तावना

वर्तमान में व्यक्तियों के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ हैं जिनमें विभिन्न प्रकार की समस्याएँ निहित होती है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा एक सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम है। शिक्षा ने संपूर्ण विश्व में अपनी श्रेष्ठता एवं प्रभावशीलता को मजबूती के साथ स्थापित किया है। शिक्षा अपने आप में एक ऐसा उपकरण है, जिसके माध्यम से एक देश वर्तमान में "वह क्या है"? से भविष्य में "वह कैसे होने की आशा रखता है" में स्वयं को स्थानांतरित करता है।

मनोवैज्ञानिक ***जॉन डी0 मेयर एवं पीटर सलोवे (1989)*** और ***डेनियल गोलमैन (1995)*** ने मस्तिष्क विज्ञान और मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों के आधार पर बुद्धि के एक नये प्रत्यय – सांवेगिक बुद्धि (EQ) को जन्म दिया। इनके अनुसार सांवेगिक बुद्धि, व्यक्ति के संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित है, जिसका सम्बन्ध व्यक्ति की स्वजागृति, स्वप्रेरणा, आवेग–नियंत्रण एवं दूरदर्शिता जैसे गुणों से है। 1989 में जॉन मेयर और पीटर सलोवे ने पहली बार इस अवधारणा को व्यक्ति की स्वयं की भावनाओं तथा दूसरे की भावनाओं को समझने की योग्यता के रूप में वर्णित किया। उसके बाद 1995 ई0 में डेनियल गोलमैन जो एक पत्रकार और हावर्ड विश्वविद्यालय में प्रवक्ता थे, ने अपनी पुस्तक (इमोशनल इन्टेलीजेन्स) में इस पद को लोकप्रिय बनाया। इनके अनुसार मनुष्य के अन्दर मौजूद संवेदनशीलता सांवेगिक बुद्धि (EQ) भी उसके जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है। अपनी संवेदनशीलता के जरिए ही हम आसपास के माहौल को जानने व परखने के बाद एक निश्चित धारणा बनाते हैं। यह आध्यात्मिक बुद्धि एस0क्यू0 ही है जिसके कारण हमारे अन्दर दृढता, करूणा, प्रेरणा जैसे भाव पैदा होते हैं और हम सुख–दुःख की घडी में यथोचित प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाते हैं। आध्यात्मिक बुद्धि एस0क्यू0 ही हमें स्वयं की भावनाओं और दूसरों की भावनाओं को जिनसे हमें प्रेरणा मिलती है, को समझने की सामर्थ्य प्रदान करती है और हमारे अन्दर भावनाओं का उचित रूप से व्यवस्थित करने के साथ हमारे सम्बन्धों में प्रगाढता लाती है।

यहीं कारण है कि आजकल दुनिया में बडी संख्या में लोग और यहां तक कि बहुचर्चित कंपनियाँ भी अपनी क्षमताएं बढाने के उद्देश्य से आध्यात्मिक बुद्धि एस0क्यू0 की शरण में जा रही हैं। एक मल्टीनेशनल कम्पनी में 50 हजार रूपया महीना वेतन पाने वाले 32 वर्षीय बिजनेस एक्जीक्यूटिव ने जब नौकरी छोडकर डॉक्यूमेन्टरी फिल्म बनाने का काम शुरू किया तो आमतौर पर लोगों ने यही समझा कि उसका वर्तमान नौकरी से मोहमंग हो गया है इसलिए उसने अपना कैरियर बदल लिया है। लेकिन बात सिर्फ इतनी नहीं है दरअसल, उस नौजवान ने मोहभंग की वजह से नौकरी नहीं छोडी, बल्कि यह निर्णय उसने अपने अंदर जगी आध्यात्मिक समझ के वशीभूत होकर लिया है। युवक ने सोचा कि उसने अभी तक के निर्धारित लक्ष्य तो हासिल कर लिए लेकिन जीवन को और अधिक खूबसूरत और रचनात्मक करना जरूरी है।

'आत्म–साक्षात्कार' व्यक्ति के जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य होता है। जब व्यक्ति आत्म–साक्षात्कार की स्थिति में पहुंच जाता है तो वह अपने कार्यों द्वारा अपने जीवन को अधिक अर्थपूर्ण, मूल्यवान और दूसरों के दुःख–दर्द में सहायता करने हेतु व्यतीत करता है। वह सामाजिक

न्याय को महत्व देता है तथा अपना समय, शक्ति व प्रतिभा का उपयोग सर्वहित हेतु करता है। अपने कार्यों का निरन्तर अवलोकन कर व्यवहार में शोधन तथा रूपान्तरण की प्रवृत्ति ऐसे व्यक्तियों के व्यवहार में परिलक्षित होती है तथा वे स्वार्थ की सीमाओं से ऊपर उठकर समाज व राष्ट्र के कल्याण के लिए प्रयासरत रहते है। ऐसे व्यक्ति स्वयं से कुछ प्र न पूछते हैं जैसे–

1. मैं कौन हूँ ?, यहाँ क्यों आया हूँ ?
2. मेरे कार्य मुझे कहाँ ले जा रहे हैं ?
3. मुझसे जुड़े लोगों की प्रसन्नता के लिए मैं क्या अतिरिक्त प्रयास कर रहा हूँ?
4. दूसरी की अपेक्षाओं की पूर्ति मैं किस सीमा तक कर पा रहा हूँ ?

इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों का दृष्टिकोण परिवर्तित हो जाता है तथा वे प्रकृति और ईश्वर द्वारा प्रदत्त संसाधनों का मानव मात्र के कल्याण के लिए उपयोग हो ऐसी स्पृहा रखते हैं इस प्रकार के दृष्टिकोण के व्यक्तियों की वर्तमान समाज में बहुत आवश्यकता है। यही कारण है अधिगम प्रक्रिया में तार्किक तथा सांवेगिक बुद्धि के साथ–साथ आध्यात्मिक बुद्धि को अत्यधिक महत्व दिया जाने लगा है।

शैक्षिक समस्याओं से सम्बन्धित भाोध अध्ययन

- **शर्मा, सरिता (2006)** ने महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्तपोशित महाविद्यालयों के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं में लिंग भेद, आर्थिक सामाजिक स्तर तथा क्षेत्र विशेश के परिप्रेक्ष्य में अन्तर पाया।
- **द्विवेदी, अभिषेक (2011).** ने इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि गैर खिलाड़ी विद्यार्थियो की तुलना में खिलाड़ी विद्यार्थी सार्थक रूप से उत्तम सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन रखते हैं। खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों के गृह समायोजन, शैक्षिक समायोजन तथा स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ।
- **श्रीवास्तव, अमिता (2017).** नेउच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रावासीय व गैर–छात्रावासीय विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं एवं समायोजन समस्याओं का विश्लेशणात्मक अध्ययन' पर शोधकार्य किया।

○ **आध्यात्मिक बुद्धि से सम्बन्धित भाोध अध्ययन**

- **बेगम, लतीफा तथा सानन्दा राज (2004)** ने कॉलेज अध्यापकों में कार्य संतुश्टि एवं आध्यात्मिक अभिविन्यास के सन्दर्भ में महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा कार्य संतुष्टि अधिक मात्रा मे ंपायी गयी।
- **सिंह, जितेन्द्र(2011)** ने सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन आकांक्षा स्तर एवं भौक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक अन्तर पाया गया।
- **मिश्रा, मुरलीधर एवं भार्मा, उर्व ी (2016).** ने 'विद्यालय एवं वि वविद्यालय स्तर पर अध्यनरत् एकल खेल खेलने वाली खिलाड़ियों की आध्यात्मिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन' किया।
- **अध्ययन की आव यकता व महत्व**

देश के शैक्षिक स्तर पर महिलाओं के उत्थान एवं संवैधानिक प्राविधानों को पूर्ण करने के लिए ही प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकारों ने अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की। इसके परिणामस्वरूप भी नारियों की शिक्षा उपेक्षित रही है। इस तथ्य का मूल्यांकन करने हेतु निरंतर ऐसे शोध करने होंगे जो नारियों की शैक्षिक समस्याओं को जानने का प्रयास करें और साथ ही यह जानने का प्रयास करें कि अगर उनके मार्ग में कुछ अवरोध है तो इन अवरोधों का उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है? तात्पर्य यह हैं कि इन
मार्ग में आने वाली बाधाओं से उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर निम्न होता है या उन पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
यह अध्ययन स्नातक स्तर पुरुष और महिला छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं, शैक्षिक समस्याओं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का पता लगाने का प्रयास करता है। ऐसा करके, इसका उद्देश्य उच्च शिक्षा के अनुभवों में लिंग–आधारित मतभेदों की समझ में योगदान देना और यह अंतर्दृष्टि प्रदान करना है कि शैक्षणिक संस्थान सभी छात्रों के समग्र विकास और सफलता का बेहतर समर्थन कैसे कर सकते हैं।
आध्यात्मिक बुद्धि के संदर्भ में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं से सम्बन्धित कोई अध्ययन शोधकर्त्री को प्राप्त नहीं हुआ है। उपर्युक्त अध्ययन के परिणामों को देखकर शोधकर्त्री ने इसे अपने अध्ययन का आधार बनाया है।

समस्या कथन

"स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन।"

समस्या में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

स्नातक स्तर - गुड (1945) के अनुसार– "शिक्षा का वह स्तर जिसमें विशेष रूप से किशोरों की आवश्यकताओं को अंगीकृत किया हैं वही स्नातक स्तर है।"

शैक्षिक समस्यायें- शैक्षिक समस्याओं से तात्पर्य उन बाधाओं से है जो उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न करते हैं। इन अवरोधों को मुख्यतः चार भागों में बांटा जायेगा–

1. शिक्षक और शिक्षण से संबंधित समस्याएं
2. सामाजिक एवं शैक्षणिक वातावरण से संबंधित समस्याएं
3. संगठनात्मक और प्रशासनिक समस्याएं
4. सांस्कृतिक और ऐतिहासिक समस्याएं

आध्यात्मिक बुद्धि – 'आध्यात्मिक बुद्धि' एक ऐसी क्षमता का परिसूचक है। जिसके चलते हम अपने जीवन की परिस्थितियों में अर्थ–निरूपण, सन्दर्भीकरण एवं रूपान्तरण की प्रक्रियाओं को सहज रूप से विकसित कर लेते हैं। आध्यात्मिक बुद्धि प्रधान व्यक्तियों में अग्र सोच होती है इसलिए वे घटित होने वाली घटनाओं एवं सम्भावनाओं का पूर्व में ही अनुमान लगा लेते हैं।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- स्नातक स्तर के उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।
- स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रतिदर्श

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का अनुसरण किया गया। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र में अवस्थित जनपद झांसी के महाविद्यालयों को चयनित किया गया है। द्वितीय स्तर पर चयनित महाविद्यालयों के तृतीय वर्ष में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के 600 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

निर्धारित प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों का वितरण

क्र.सं.	समूह	विज्ञान संकाय	कला संकाय	वाणिज्य संकाय	योग
1	स्तर के तृतीय वर्ष में अध्ययनरत छात्र	100	100	100	300
2	स्तर के तृतीय वर्ष में अध्ययनरत छात्रायें	100	100	100	300
	योग	**200**	**200**	**200**	**600**

उपकरण चयन

शोधार्थी ने छात्र–छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि के मापन हेतु **के0 एस0 मिश्रा** द्वारा निर्मित परीक्षण ''आध्यात्मिक बुद्धि मापनी'' का चयन किया गया एवं शोधार्थी ने स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की **शैक्षिक समस्याओं** से सम्बन्धित निर्धारण मापनी का स्वनिर्माण किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

वर्तमान शोध अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक (Descriptive) एवं अनुमानात्मक (inferential) सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। इस अध्ययन के सन्दर्भ में शोद्यार्थी द्वारा पूर्व की भाँति दो तकनीकियाँ अपनाई गई, यथा–

प्रथम – तुलनात्मक तकनीकी के अन्तर्गत, उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले तथा निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

द्वितीय – सहसम्बन्धात्मक तकनीकी के अन्तर्गत, स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं तथा उनकी आध्यात्मिक बुद्धि से सम्बन्धित प्राप्तांको के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया।

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर आध्यात्मिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये सम्पूर्ण न्यादर्श को आध्यात्मिक बुद्धि के आधार पर दो समूहों यथा उच्च एवं निम्न में विभक्त किया गया। सम्पूर्ण न्यादर्श को दो समूहों में विभक्त करने के लिये आध्यात्मिक बुद्धि के मध्यमान तथा मानक विचलन को आधार बनाया गया। स्नातक स्तर के छात्र–छात्रायें जिनके आध्यात्मिक बुद्धि मापनी पर प्राप्तांक 162 $(M + 1\sigma)$ एवं उससे अधिक थे उन्हे उच्च आध्यात्मिक बुद्धि के समूह में रखा गया तथा छात्र–छात्राओं जिनके आध्यात्मिक बुद्धि मापनी पर प्राप्तांक 109 $(M - 1\sigma)$ या उससे कम थे उन्हे निम्न आध्यात्मिक बुद्धि के समूह में रखा गया। इन

दोंनों समूहों की शैक्षिक समस्याओं के मध्यमानों में अन्तर ज्ञात करने के लिए तथा शून्य परिकल्पनाओं की जांच हेतु टी–मान की गणना की गयी जिसके मानकों को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है

तलिका 1

स्नातक स्तर के उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का मध्यमान, मानक–विचलन तथा क्रान्तिक–अनुपात मान

स्मूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	क्रान्तिक –अनुपात मान	सार्थकता स्तर
निम्न आध्यात्मिक बुद्धि	99	202.16	17.45	5.75	>0.05
उच्च आध्यात्मिक बुद्धि	130	190.82	18.46		

उपरोक्त तालिका में प्रदत्त शैक्षिक समस्याओं के सन्दर्भ में प्राप्त सांख्यिकीय मानों के गहन निरीक्षणोपरांत स्पष्ट होता हैं कि शैक्षिक समस्याओं मापनी पर निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले समूह के प्राप्तांको का मध्यमान उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले समूह के प्राप्तांको के मध्यमान से अधिक पाया गया। दोंनों वर्गों के मध्य मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये क्रान्तिक–अनुपात मान की गणना की गयी। तालिका में प्रदर्शित सांख्यिकीय दृष्टि से 0.05 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक–अनुपात मान (5.75) पाया गया।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पना ***"स्नातक स्तर के उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है"*** अस्वीकृत होती हैं। परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में, निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक समस्यायें कम पायी गयी जैसा कि ग्राफ संख्या से भी प्रदर्शित होता है।

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं एवं आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिये दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध की भी गणना की गयी जिसे निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 2

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं एवं आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध

चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शैक्षिक समस्या	-0.21	0.01 स्तर पर सार्थक
आध्यात्मिक बुद्धि		

तालिका 2 में प्रदर्शित शैक्षिक आकांक्षा एवं आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक (r = -0.21) से स्पष्ट होता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर आध्यात्मिक बुद्धि का सार्थक प्रभाव पाया गया, जिन छात्र–छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि का स्तर उच्च होता है उनमें शैक्षिक समस्यायें कम पाई जाती हैं।

शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष

उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में, निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक समस्यायें कम पायी गई। स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं में आध्यात्मिक बुद्धि की सकारात्मक भूमिका पायी गई।

भौक्षिक निहितार्थ

सम्पूर्ण भौक्षणिक प्रक्रिया के अन्तर्गत पूर्ण समानता और समावे ा की नीति का पालन किया जाए ताकि सभी छात्रों को बिना किसी भेदभाव के गुणवत्तापूर्ण ि ाक्षा प्रदान की जा सके। सभी ि ाक्षकों को ज्ञान की एकता और अखण्डता को सुनि ि चत करने के लिये विभिन्न विशयों का समावे ा करते हुए विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के बीच एक बहुविशयक और समग्र ि ाक्षा का विकास करने पर बल देना चाहिए।

विद्यार्थियों हेतु निहितार्थ

एक दूसरे की भावनाओं को समझना तथा संवेगों को परिपक्वता के साथ संयोजित करना हर विद्यार्थी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सांवेगिक परिपक्वता विद्यार्थी को परिवार, सहपाठी तथा विद्यालयी वातावरण में उचित ताल–मेल बनाने में मदद करती है इसलिए वि ोशकर पुरुश विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का विकास करने पर बल देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार-

1. **आलम, महताब (2012).** ''कक्षा 8 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव, मानसिक स्वास्थ्य एवं भौक्षिक अभिरूचि के प्रभाव का अध्ययन'' (भोध प्रबन्ध, ि ाक्षा ाास्त्र) महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड वि वविद्यालय, बरेली. http://hdl.handle.net/10603/328907
2. **ध्यानी, रचना .(2007).** ''कामकाजी एवं गैर–कामकाजी के महिलाओं के कि ोर बालक एवं बालिकाओं की चिन्ता का उनकी भौक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव एक तुलनात्मक अध्ययन'' (भोध–प्रबन्ध, गृहविज्ञान). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर. http://handle.net.in/10603/268622
3. **गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2014).** भौक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद: भारदा पुस्तक भवन.
4. **शर्मा, सरिता (2006).** ''महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्तपोशित महाविद्यालय के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं का सम्बन्धः एक अध्ययन'' (भोध प्रबन्ध, ि ाक्षा ाास्त्र).चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ
5. **श्रीवास्तव, नीरज. (2012).** ''कानपुर नगर के स्नातक स्तर के खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक गुणों बुद्धि लब्धि, समायोजन एवं भौक्षिक उपलब्धि का वि लेशणात्मक अध्ययन'' (शोध प्रबन्ध, ि ाक्षा ाास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर. http://handle.net.in/10603/220360
6. **सिंह, जीतेंद्र (2011).** ''सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन आकांक्षा स्तर एवं भौक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' (बरेली मण्डल के कक्षा 9 व 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के वि ोश सन्दर्भ में) (भोध प्रबन्ध, ि ाक्षा ाास्त्र). महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड वि वविद्यालय, बरेली http://handle.net.in/10603/328512
7. **सिंह, बाबू राम (2012).** ''स्नातक के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विधार्थियों की जीविका वरीयता, समायोजन तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' (भोध–प्रबन्ध, ि ाक्षा ाास्त्र). महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलण्ड वि वविद्यालय, बरेली. http://handle.net.in/10603/328899
8. **यादव, प्रमोद कुमार (2011).** ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के भौक्षिक आकांक्षा स्तर, आधुनिकीकरण और जीवन मूल्यों का उनकी भौक्षिक उपलब्धि के साथ का एक अध्ययन'' (भोध–प्रबन्ध, ि ाक्षा ाास्त्र) वीर वहादुर सिंह पूर्वांचल वि वविद्यालय, जौनपुर. http://handle.net.in/10603/181717